महाभारत के प्रमुख आख्यानों तथा पात्रों का प्रतीकात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी–एच0 डी0 की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की
प्रस्तावित रूपरेखा
(2016)

निर्देशक	शोधार्थिनी
डा0 अभिमन्यु असि0 प्रो0 संस्कृत विभाग, कला संकाय	कीर्ति संस्कृत विभाग
विभागाध्यक्ष	**संकाय प्रमुख**
प्रो0 गिरिराज कुमार संस्कृत विभाग, कला संकाय	प्रो0 (श्रीमती) रागिनी रॉय चित्रकला विभाग, कला संकाय डी. ई. आई., दयालबाग़

अध्ययन का क्षेत्र : संस्कृत साहित्य

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा–282005

महाभारत के प्रमुख आख्यानों तथा पात्रों का प्रतीकात्मक अध्ययन

महाभारत ग्रन्थ महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित भारतीय संस्कृति सनातन धर्म का एक महान् ग्रन्थ तथा अमूल्य रत्नों का विपुल भण्डार है। ''महाभारत पवित्र धर्मशास्त्र, एक उत्तम अर्थशास्त्र और एक श्रेष्ठ मोक्षदायक शास्त्र है'' **आदि पर्व–1–385** महाभारत सम्पूर्ण ज्ञान का निधान है, उसको पंचम वेद का पद प्रदान किया गया है। महाभारत भारतीय साहित्य का ही नही अपितु विश्व साहित्य का एक अद्भुत ग्रन्थ है। एक लाख श्लोकों की संख्या के कारण यह शतसहस्त्रसंहिता के नाम से प्रसिद्ध है। आकार की विशालता, विषयों की व्यापकता, लोकप्रियता आदि की दृष्टि से यह विश्व साहित्य में अद्वितीय है। व्यास जी की उक्ति यर्थाथतः चरितार्थ होती है कि **''यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्''** अर्थात् जो अन्यत्र है, वह महाभारत में है और जो महाभारत में है वह अन्यत्र भी नहीं है।

विषयों की महत्ता इस विशालता को अधिक गौरवपूर्ण बना देती है। महाभारत में धार्मिक, सामाजिक, दार्शनिक, नैतिक, लौकिक व पारलौकिक आदि विषयों का गहन अध्ययन हुआ है। गृहस्थ व सन्यासी जीवन का कोई पक्ष अछूता नहीं रहा है। धर्म, राजनीति, पारिवारिक, अनुशासन, जप, तप, यज्ञ, हवन, शिष्टाचार, सदाचार, आध्यात्म, वीरता, शरणागत, वत्सलता, दया, क्षमा, तितिक्षा, परोपकार आदि संसार को सुखमय शांतिमय और तेजस्वी बनाने वाले प्रंसग ही केवल इसमें नहीं अपितु संसार के प्राणिमात्र का कल्याण करने वाली सूक्तियाँ भी दी गई हैं।

भारत के आदिमतम् ग्रन्थों में कथा की सत्ता सर्वमान्य है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, तथा संस्कृत साहित्य इत्यादि में कथा का विस्तार दिखाई देता है। महाभारत में आख्यान महाभारत का विशिष्ट प्रासाद है इन आख्यानों का आश्रय लेकर विश्व साहित्य के परवर्ती कवियों ने अनेक साहित्य का सृजन करके आख्यानों की महत्ता सूचित की है।

आख्यान प्रत्यक्ष कथा कहता है । आख्यान शब्द 'आ' उपसर्ग पूर्वक आ[1]्+ख्या प्रकथने धातु से निष्पन्न हुआ है।

''आख्यायते अनेन इत्याख्यानम्''।

आख्यान् में 'ख्या' शब्द का अर्थ है – **'प्रकट करना'** और इसके साथ आ[1] जोड़ने से उसका अर्थ– **'अच्छी तरह से प्रकट करना।** इस प्रकार आख्यान का अर्थ होता है– **''किसी पूर्वज्ञात घटना को समझने की क्रिया।''** अर्थात आरम्भ से कथा कहना। जैन आचार्य हेमचन्द्र ने एक व्यक्ति द्वारा एक समय कही जाने वाली कथा को आख्यान कहा।

आख्यानक संज्ञा तल्लभते यदाभिनयन् पठन् गायन्।

ग्रन्थिकः एकः कथयति गोविन्दवद् अवहिते सदसि।। काव्यानुशासन

अर्थात् जिसका एक ही कथाकार (कथा पढ़ने वाला), अभिनय के साथ पठन और गाकर एकत्रित होने वाले श्रोता को सुनाएँ वही आख्यान है।

साहित्यदर्पणकार श्री विश्वनाथ आख्यान की व्याख्या इस प्रकार करते हैं **''आख्यानं पूर्ववृत्तान्तोक्तिः''।** अर्थात पूर्व हो चुकी घटना के कथन को कहना ही आख्यान है।

आधुनिक विद्वानों ने आख्यान को सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक जीवन का मूल माना है।

आख्यान मनोरंजन का साधन है। आख्यानों में मनोरंजन के साथ–साथ चारित्रिक प्रर्कष, तथा कर्मण्यता आदि की उपलब्धि भी होती है। महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान, मार्जार–मूषक आख्यान, गृध्र–गोमायु आख्यान, जन्तूपाख्यान, नलोपाख्यान, और रामोपाख्यान की जितनी उपादेयता तत्तकालीन समय में थी, उतनी ही आधुनिक समय में भी दिखाई देती है।

महाभारत के पात्र भारतीय जनता के लिये जीवन के अमर नायक बन गये हैं। भारतीय समाज में भीष्म के नाम के साथ उनके ब्रह्मचर्य, विलक्षण त्याग, निग्रह, पराक्रम, और ज्ञान गौरव की कथा भारतीय इतिहास में अमर है, और हमेशा अमर रहेंगी। युधिष्ठिर का सत्य, द्रौपदी का पातिव्रत्य, पाण्डवों का बन्धुत्व भाव आदि भारतीय समाज के आदर्श हैं।

भारतीय जनमानस में प्राचीनकाल से महाभारत के पात्र आदर्श रहे हैं, यही कारण है कि महाभारत में उल्लिखित पात्र आज आधुनिक मनुष्यों के मार्ग को प्रशस्त करने में सहायक हैं। दिन–प्रतिदिन मानव का नैतिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक इत्यादि का क्षरण हो रहा है। वहीं ऐसी अवस्था में युवावर्ग के मार्ग को प्रशस्त करने का कार्य महाभारत कर सकता है। महाभारत के पात्र समाज के लिए प्रेरक सिद्ध हो सकते हैं, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये मैंने शोध का आधार महाभारत के आख्यानों तथा पात्रों को बनाया है।

महाभारत भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। अतः उसके विविध पक्षों को आधार बनाकर शोधकार्य किये गये हैं तथा हो रहे हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं–

प्राक्तन कार्य

1. महाभारत का अर्थवैज्ञानिक अध्ययन, दूबे, जगत् नरेन, रायपुर, 1973
2. महाभारत में वेदाc विर्मश, मिश्र, हरिवंश, वाराणसी, 1986
3. महाभारत की सूक्तियों का आलोचनात्मक अध्ययन, तिवारी, चंदर प्रकश, वाराणसी, 1987
4. महाभारत के शान्तिपर्व में धर्म का स्वरूप एवं विवेचन, दत्त, कुसुम, कुरूक्षेत्र, 1989
5. महाभारत के नैतिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन, सिंह पुष्पा, जबलपुर, 1989
6. महाभारत के अनुशासन पर्व का समीक्षात्मक अध्ययन, रानी साधना, दिल्ली, 1991
7. महाभारत के आलोक में युधिष्ठिर के जीवन दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन, तिवारी सुनीता, 1998
8. महाभारत में अवतारवाद, तबस्सुम, सलीम, अलीगढ़, 1998
9. महाभारत के अनुशासन पर्व एवं अश्वमेधिक पर्वों में क्रिया पदों का अध्ययन, आर्य, रमेश चंदर, कुरूक्षेत्र, 1999
10. महाभारत में ज्योतिष विषयों का परिशीलन, शर्मा, परशुराम, दरभंगा, 2000

अधुनातन उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर महाभारत के आख्यान एवं पात्रों के प्रतीकात्मक अध्ययन को आधार बनाकर कोई भी कार्य नहीं हुआ। अतः मैंने इसको अपने शोध–प्रबन्ध का विषय बनाया है।

मानव इस सृष्टि की अनेकानेक वस्तुओं से निरंतर परिचय प्राप्त करता हुआ अपने ज्ञान–क्षेत्र का विस्तार करता रहता है। प्रत्येक नयी वस्तु उसकी जिज्ञासा का विषय बन जाती है। अपनी जिज्ञासा को जब वह दूसरे के सम्मुख स्पष्टतः प्रस्तुत नहीं कर सकता, तब अपने सूक्ष्म तथा अर्द्ध स्पष्ट भावों की अभिव्यक्ति के लिये प्रतीक को माध्यम बनाता है। मानव की जिज्ञासा प्रवृत्ति भले ही दर्शन या आध्यात्मिक, वैज्ञानिक या भावात्मक की हो उसे स्पष्ट करने के लिये प्रतीक का आवश्यकता पड़ती है। इसी कारण प्रतीक का मानव सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान स्वीकार किया जाता है। भाषा वैज्ञानिक भी मानव की हृदयगत भावनाओं और अर्जित अनुभूतियों की सबलतम अभिव्यक्ति का माध्यम तथा भाषा ध्वनि का विकास प्रतीकात्मकता से ही स्वीकार करते हैं।

गूढातिगूढ़ भावों की व्यंजना प्रतीकों के माध्यम से सहज और सुस्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार प्रतीकों का प्रयोग मानव द्वारा भाव–अभिव्यंजना की एक शैली के रूप में किया जाता है। प्रतीकों का प्रयोग यद्यपि हमारे सभी आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व, साहित्यिक क्षेत्रों में होता है, परन्तु इनमें से काव्य के क्षेत्र में प्रतीक शैली कुछ अधिक उपयुक्त हुई और फलतः वैदिक साहित्य से लेकर आज तक काव्य में इसका प्रयोग बराबर होता आ रहा है। प्रतीक शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में **''प्रतीयते अनेन इति प्रतीकम्''**[1] अर्थात् जिससे प्रतीत हो या किसी वस्तु की अभिव्यक्ति हो वह प्रतीक है। सायण ने ऋग्वेद के ''**दघाते ये अमृते सुप्रतीके**'' की व्याख्या करते हुये इसका अर्थ 'रूप' किया है। ऋग्वेद 1/185/6 अमरकोश के व्याख्याता श्री भानुदीक्षित भट्टाचार्य ने इसका अर्थ किया है– ''किसी अगोचर वस्तु का प्रतिनिधि'' इस प्रकार प्रतीक का व्युत्पत्तिपरक अर्थ किया जा सकता है– वह चित्र, रूप या चिह्न जो किसी अन्य वस्तु का द्योतक हो।

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार प्रतीक शब्द का प्रयोग किसी अप्रत्यक्ष एवं अगोचर वस्तु के लिये किया जाता है जो मन में किसी अप्रस्तुत वस्तु की अनुभूति उस वस्तु के साथ अपने साहचर्य सम्बन्ध के कारण करा देती है।' सन्दर्भ– भारतीय एवं पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र आधारभूत तत्त्व, डॉ0 चन्द्रकला।

महाभारत ऐतिहासिक महाकाव्य है, इस ऐतिहासिक महाकाव्य में ऐतिहासिकता के साथ–साथ प्रतीकों को इस प्रकार संजोया गया है, कि एक घुला–मिला आध्यात्मिक अर्थ भी सामान्य अर्थ के साथ झलकता चलता है। इस महाकाव्य के कथानक के चरित्र कृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, धृतराष्ट्र, दुर्योधन, दुःशासन आदि के नामों में स्पष्टतः श्लेष गर्भित एवं साभिप्राय प्रतीकात्मकता है।

महाभारत का दुर्योधन मन का प्रतीक है। मन के जितने अवगुण होते हैं, वे सब दुर्योधन के व्यक्तित्व में निहित हैं।

''दुर्योधन अर्थात् दुर्गुण प्रधान'' हमेशा, वैर, विरोध, ईर्ष्या, राग द्वेष में रहता है, दूसरों के साथ द्रोह घात करता है दुर्योधन की उग्रता का एक उदाहरण एक युधिष्ठिर और अर्जुन जैसे–उनके भाई भले ही न दें, पर भीम को चुप रह जाने और सह लेने का स्वभाव नहीं मिला था। इसलिए वह दुर्योधन को जैसे को तैसा का पाठ पढ़ाने में कोई कसर नहीं रखता था। बार–बार अपमानित और परास्त होने पर दुर्योधन के मन में सभी पाण्डु–पुत्रों के प्रति ईर्ष्या गहरी होती गयी और भीम के प्रति तो वह ईर्ष्या बाल्यकाल से ही द्वेष भावना में परिणत हो चुकी थी। भीम को सदा के लिये रास्ते से हटा देने की योजना दुर्योधन के किशोर बुद्धि व मन की ही उपज थी और प्रमाण–कोटि नाटक स्थान पर इस योजना को कार्य रूप में परिणत किया। इन सबसे यह स्पष्ट हो जाता है कि दुर्योधन की प्रवृत्ति सद्गुणों की अपेक्षा दुर्गुणों की ओर अधिक थी और उस विनाशकारी युद्ध का मूल कारण भी उसी अमर्यादित महत्वाकांक्षा और अन्यायपूर्ण हठ में निहित था।

महाभारत में वर्णित आख्यानों तथा पात्रों की संख्या अधिक है। अतः शोधार्थिनी की शक्ति एवं समय सीमित है, सभी आख्यानों एवं पात्रों का शोध का विषय न बनाकर कुछ प्रमुख आख्यानों एवं पात्रों पर ही शोध केन्द्रित रहेगा।

मैं अपने शोध कार्य को सम्पन्न करने के लिये अन्तर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग करते हुये आख्यान एवं पात्रों में अन्तर्निहित गूढ़ार्थ को प्रकाश में लाने का प्रयास करूँगी। शोधार्थिनी परवर्ती काल में इन आख्यानों एवं पात्रों की क्या उपजीव्यता रही है, इसका क्या योगदान है, इसका भी मूल्यांकन करेगी। इसके अनन्तर सन्दर्भ सूची भी प्रस्तुत की जायेगी।

विद्वज्जनों से विनम्र निवेदन है कि शोधार्थिनी को प्रकृत शोध करने की अनुमति एवं मार्गदर्शन प्रदान कर, अनुगृहीत करें।

शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया जायेगा।

''महाभारत के प्रमुख आख्यानों तथा पात्रों की प्रतीकात्मक अध्ययन''

1. प्रथम अध्याय

महाभारत, आख्यान तथा प्रतीक : सामान्य परिचय।

(क) महाभारत–परिचय व ऐतिहासिकता।

(ख) आख्यान–अर्थ, स्वरूप तथा विकास–परम्परा।

(ग) प्रतीक–अर्थ, स्वरूप तथा विकास।

निष्कर्ष।

2. द्वितीय अध्याय

महाभारत के प्रमुख आख्यानों तथा पात्रों का परिचय।

(क) महाभारत के प्रमुख आख्यान।

नलोपाख्यान, अगस्त्योपाख्यान, ऋष्यश्रृंग उपाख्यान, सगरोपाख्यान, सुकन्योपाख्यान, मान्धाता उपाख्यान, सोमक उपाख्यान, प्रलय और मत्स्य उपाख्यान, धुन्धुमार उपाख्यान, धर्मव्याध उपाख्यान, नहुष एवं त्रिशिरा आख्यान, विरोचन आख्यान, ययाति उपाख्यान, शिखण्डी आख्यान, शकुन्तला आख्यान

(ख) महाभारत के प्रमुख पात्र।

भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर, धृतराष्ट्र, दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण, शकुनि, कृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, शल्य, गान्धारी, कुन्ती, द्रोपदी, माद्री।

निष्कर्ष।

3. तृतीय अध्याय

महाभारत के आख्यानों की प्रतीकात्मकता।

(क) नलोपाख्यान, अगस्त्योपाख्यान, ऋष्यश्रृंग उपाख्यान, सगरोपाख्यान, सुकन्योपाख्यान

(ख) मान्धाता उपाख्यान, सोमक उपाख्यान, प्रलय और मत्स्य उपाख्यान, धुन्धमार उपाख्यान, धर्मव्याध उपाख्यान

(ग) नहुष एवं त्रिशिरा आख्यान, विरोचन आख्यान, ययाति उपाख्यान, शिखण्डी आख्यान, शकुन्तला आख्यान

निष्कर्ष।

4. चतुर्थ अध्याय

महाभारत के पात्रों की प्रतीकात्मकता।

(अ) आख्यान अर्न्तगत पात्रों की प्रतीकात्मकता ।

(ब) अवशिष्ट पात्रों की प्रतीकात्मकता।

(क) स्त्री पात्र।

गान्धारी, कुन्ती, माद्री, दौपदी

(ख) पुरुष पात्र।

भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर, धृतराष्ट्र, दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण, शकुनि, कृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, शल्य, गान्धारी, कुन्ती, द्रोपदी, माद्री।

(ग) अन्य पात्र–शिखण्डी

निष्कर्ष।

5. पंचम अध्याय

उत्तरवर्ती संस्कृत साहित्य में महाभारत के आख्यानों तथा पात्रों की उपजीव्यता।

(क) आख्यानों की उपजीव्यता।

(ख) पात्रों की उपजीव्यता।

(ग) उपजीव्य साहित्य में महाभारत का स्थान।

निष्कर्ष।

6. उपसंहार ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

मूल ग्रन्थ

1. **महाभारत** – श्री मन्महर्षिवेदव्यासप्रणीत, प्रकाशक गीता प्रेस, गोरखपुर, 2005

सहायक ग्रन्थ

1. कामायनी और उर्वशी में प्रतीक योजना–डॉ. मदन लाल, श्री सोमनाथ ढल, संजय प्रकाशक, दिल्ली, 1998

2. प्रतीक शास्त्र–डॉ. परिपूर्णानन्द वर्म्मा, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान लखनऊ, 1964

3. वैदिक साहित्य का इतिहास–डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्भा सुर भारती ।

4. वैदिक साहित्य में विधायें–डॉ. कृष्णलाल, जे.पी. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1996

5. भारतीय एवं पाश्चात्य सौन्दर्यशास्त्र आधारभूत तत्व , डा0 चन्द्रकला, पब्लिशर्स, आगरा–1998

6. महाभारत कालीन नारी–डॉ. स्काटलस्टिकाकुनूर, संस्कृत विभाग, राँची विश्व विद्यालय, 2001

7. महाभारत का काव्य सौन्दर्य, डॉ श्रीमती सरला दीक्षित, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली–1994

8. महाभारत चरित चर्चा–उपेन्द्र, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

9. महाभारत के प्रवीण द्रोणाचार्य,नृसिंह प्रसाद भादुड़ी उत्पल बैनर्जी, रेमाघव पब्लिकेशन्स, 2008

10. महाभारत में शांति पर्व का आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ. सुमेधा विद्यालंकार, ईस्टर्न बुक, नई दिल्ली, 1984

11. महाभारत समाजशास्त्रीय अनुशीलन , नत्थूलालगुप्त, 1994

12. महाभारत के आख्यान उपाख्यान की समीक्षा–जय श्री शांतिलाल जोशी, प्रिज्म बुक इण्डिया, जयपुर, 2012

13. महाभारत के स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. उषा शर्मा, मानसी प्रकाशन, मेरठ, 1990

14. धर्मराज युधिष्ठिर चन्द्रबली त्रिपाठी, जे.पी. पब्लिशिंग, दिल्ली, 1992

15. घृतराष्ट्र का जीवन परिचय–डॉ. प्रज्ञा अथइया, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 1999

16. संस्कृत वा्ङमय का वृहद इतिहास तृतीय खण्ड–श्री बल्देव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

17. सिद्ध और नाथ साहित्य में प्रतीक योजना–विनोद कुमार तनेजा, निर्मल पब्लिकेशसन्स, 1998

अनुसन्धान प्रविधि के लिये

1. अनुसन्धान परिचय – पारसनाथ, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 1963
2. अनुसन्धान विधियाँ – डा0 डी.एन. श्रीवास्तव, साहित्य प्रकाशन, आगरा।

शब्दकोश

1. संस्कृत हिन्दी कोश–वामन शिवरामआप्टे, मोतीलाल, बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली, 1966–1969
2. परिजात कोश–ईश्वर चन्द्र शर्मा, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2004
3. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ–स्वर्गीय चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा, इलाहाबाद, 1957
4. वाचस्पत्यम्–(बृहत संस्क्रताभिधानम्) श्री तारानाथक्रत वाचस्पति भट्टाचार्येण, षष्ठ भाग, चौखम्बा संस्क्रत सीरीज ऑफिस, वाराणसी।
5. शब्दकल्पद्रुम– राधाकान्त देवबहादुर, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी 1828।

Websites –

1. Shodhganga.Inflibnet.ac.in

2. www.sanskrit.nicin/theses.modified/Directoryv/index.htm

3. Pdfsearch.asia/shodhgangotri.htme

4. https://en.m.wikipedia.org>wiki>mahabharat